RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 July 2019, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd July 2019

मासिक पत्रिका

अजायब ✲ बानी

वर्ष : सत्रहवां
अंक : तीसरा
जुलाई : 2019

4 (एक शब्द)
मुद्दत होई यार विछुड़याँ पा फेरा

5 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा संगत को
एक खास संदेश

11 सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
काल के जुल्म

25 परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज द्वारा बाबा सावन सिंह जी के जन्मदिन पर संदेश
चुनाव आपका है

29 (परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब)
प्रेम क्या है?

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** उप संपादक : **नन्दनी**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04 सहयोग : **परमजीत सिंह, ज्योति सरदाना**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस-1, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

99 50 55 66 71 80 79 08 46 01 - 208 - मूल्य - पाँच रुपये

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

मुद्दत होई यार विछुड़याँ पा फेरा

मुद्दत होई यार विछुड़याँ पा फेरा,
रूल गऐ विच संसार विछुड़याँ पा फेरा,

1. होई कोंण खुनामी, जो तुं मुड़या इ ना, (2)
तरले ओसियां पाऐ, तुं ते सुणया इ ना,
आजा आजा आजा (2), मुड़या पा फेरा,
मुद्दत होई यार .....

2. लंघदे ने दिन साडे, तरले पोंदेयां दे, (2)
साह जे दाता चलदे, साडे जिओं देयां दे,
करे यतन बहुत मैं दाता (2), बझदा ना जेरा,
मुद्दत होई यार .....

3. मन वी दागी, तन वी दागी हो गया है, (2)
समझ नी ओंदी दाता, की की हो गया है,
बणके आजा वैद्य (2), जे धरजां मैं जेरा,
मुद्दत होई यार .....

4. हिम्मतां टुटियां हौंसले टुटे, तन वी मेरा थक गया, (2)
सुण सुण गल्लां ताने फिकरे, मन वी मेरा अक्क गया,
दिसदा ना कोई चारे पासे (2), पै गया जिवें है नेरा,
मुद्दत होई यार .....

5. रब सी मेरा रब है मेरा, सब कुछ तूं ही है मेरा, (2)
देख ना अवगुण अजायब जी, मैं तेरा बस मैं तेरा,
'गुरमेल' दे कोले आके (2), बैह जा इक वेरां,
मुद्दत होई यार .....

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा संगत को

एक खास संदेश

6 फरवरी 1995 — 16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

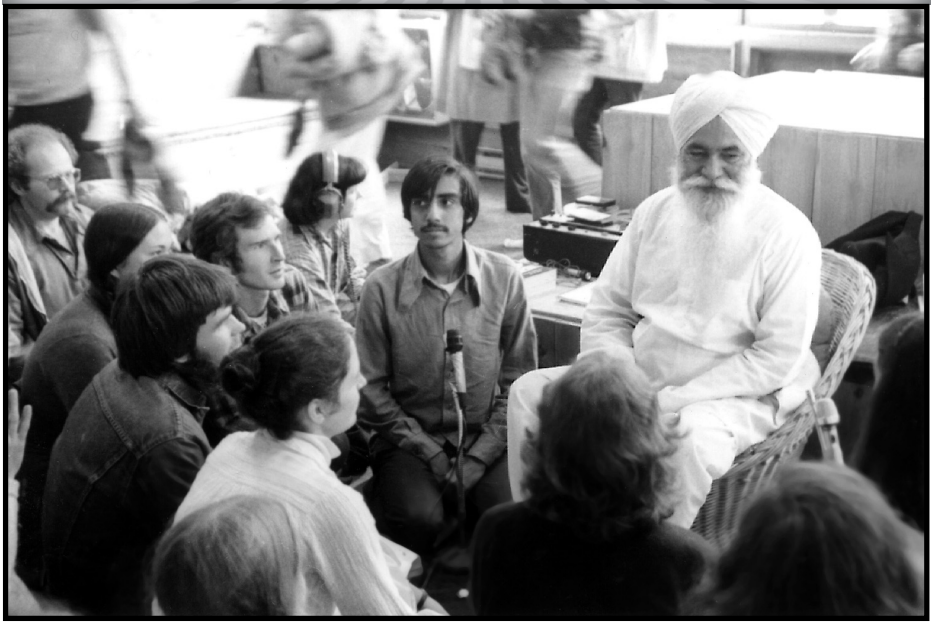

मेरे सतगुरु परमपिता कृपाल की साजी निवाजी साध संगत,

हुजूर सावन-कृपाल की दया-मेहर आप सब पर सदा बनी रहे और उनकी मधुर याद आपके दिलों में ताजा रहे। परमपिता कृपाल समझाया करते थे, ''पानी की लहर और समय किसी का इंतजार नहीं करते।''

वक्त हाथों से बे-इख्तियार निकलता जा रहा है और हम सब हर पल उस घटना के नजदीक जा रहे हैं जिसे मौत या मृत्यु कहते हैं। मौत के बारे में सभी सन्त-महात्माओं ने अपने ढंग से, अपने शब्दों में हमें सावधान किया है लेकिन हम ऐसे जीव हैं कि हमारे कान पर जूं भी नहीं रेंगती।

मैं सतसंग में, दर्शनों के समय और पत्रों द्वारा अपने महान गुरु के आदेश अनुसार इस सच्चाई का होका देता रहता हूँ कि न जाने कब अचानक इस शरीर को छोड़ना पड़े! हम इस शरीर को अपना संगी-साथी समझ रहे हैं क्यों न हम वह काम करें या वह माल इकट्ठा करें जो यहाँ से हमारे साथ जाए और अगली दुनिया में हमारे काम आए? वह काम है 'शब्द-नाम' की कमाई, गुरु की याद और दिल में गुरु की बेरुखी का भय रखना। यह हमारा सबसे ज्यादा जरूरी काम है लेकिन इस तरफ हमारा कोई ध्यान नहीं। हम इससे बिल्कुल बेखबर हैं और गफलत की नींद में अपना कीमती समय बर्बाद कर रहे हैं। गुरुबानी का वाक है:

जागो जागो सुतयो चलया वणजारा।

गुरु साहब ने इस बात को एक जगह इस तरह लिखा है:

उठ जाग बटाउ से क्यों चिर लाया।

ऐ मुसाफिर! उठ जाग होश में आ अपनी मंजिल की तरफ कदम बढ़ा। अभ्यास, भजन-सिमरन की कमाई और कुर्बानी के बगैर आज तक परमार्थ में न किसी का कल्याण हुआ है और न होगा। यह वस्तु हमारी अपनी है और मुश्किल की घड़ी में हमारा साथ देती है। अफसोस! हमें याद ही नहीं। कबीर साहब कुलमालिक थे और संसार में आए पहले सन्त थे। आप कहते हैं:

कहो कबीर हम धुर के भेदी लाए हुक्म हजूरी।

आपने परमात्मा की तड़प और तलाश में रातें जाग-जागकर गुजारी और हमें समझाया:

सुखिया सब संसार है खाए और सोए।
दुखिया दास कबीर है जागे और रोए।।

गुरु नानकदेव जी महाराज ने प्रभु प्राप्ति के लिए ग्यारह साल कंकड़-पत्थरों का बिस्तर किया। बाबा जयमल सिंह जी ने बहुत भूख प्यास काटी और केशों को कील से बाँधकर कमाई की। बाबा सावन सिंह जी कई-कई रातें लगातार खड़े होकर बैरागण का आधार लेकर भजन करते रहे। परमपिता कृपाल ने रावी नदी के बर्फ जैसे ठंडे पानी में खड़े होकर अभ्यास किया।

प्यारे बच्चों! किसी गलतफहमी में न रहना अगर कमाई और कुर्बानी साथ नहीं होगी तो बिना भजन गुरु के दरबार में बिल्कुल जगह नहीं मिलेगी इसलिए मेरी प्रार्थना है, मेरी विनती है, मेरी अरजोई है कि आज और अभी से ही अभ्यास में नित्यनियम से समय देना शुरू करें। शुरू-शुरू में मन नहीं लगेगा और लगाना आसान भी नहीं लेकिन असंभव भी नहीं है।

भिखारी का काम है कि धनी के दर पर बैठकर भीख मांगे अगर हम दुनिया और दुनिया के बंधनों, धंधों को भूलकर गुरु के दर पर बैठेंगे, रोएंगे-चिल्लाएंगे तो अंदर वाला गुरु जो हमारी हर हरकत को देख रहा है वह जरूर-बर-जरूर हमारी चीख-पुकार सुनेगा और हमें हमारी करनी का फल देगा। यह काम न बातों से होगा न भंडारे मनाने से होगा न कॉन्फ्रेंस और सम्मेलनों से और न ही बड़े-बड़े साजो सामान और इंतजामों से होगा। आत्मा की सफाई का काम अकेले और एकांत में बैठकर अपने गुरु के आगे श्रद्धापूर्वक और विश्वास के साथ करने से होगा। ऐसी कोशिश करने से गुरु की दया-मेहर बिल्कुल साथ होगी।

प्यारे बच्चों! मेरी बात को समझें मेरी भावना की कद्र करें होश में आएं। हुजूर सावन-कृपाल के बताए हुए रास्ते और दिए

हुए काम को आज से जरूर करना शुरू कर दें इससे मेरी सेहत ठीक होगी, मेरे काम में मदद मिलेगी। मैं एक बार फिर बहुत जोर देकर कहना चाहता हूँ कि आज से कोई प्रेमी मुझे अपने घरेलु झगड़े, अपने निजी और शारीरिक मसलों के बारे में पत्र न लिखे अगर ऐसा पत्र आएगा तो उस पत्र का जवाब नहीं दिया जाएगा।

मैंने बचपन से ही अपना जीवन प्रभु की खोज और प्रभु की याद में गुजारा है। प्रभु को प्राप्त करने के लिए मैंने अनेक उपाय किए, जगह-जगह धक्के खाए, पीरों-फकीरों के पास गया और धर्म-स्थानों के चक्कर भी लगाए।

बाबा बिशनदास जी से मेरा मिलाप, उनकी संगत, उनकी डाँट और थप्पड़ उसी दया और तड़प-तलाश की एक कड़ी थी। मेरे आध्यात्मिक जीवन की नींव बाबा बिशनदास जी ने ही रखी। मैंने बाबा बिशनदास जी का दिया हुआ 'दो-शब्द' का अभ्यास उनकी दया से 18 साल जमीन के नीचे बैठकर किया और अंदरूनी तजुर्बा प्राप्त किया।

हुजूर सावन के भोले-भाले और इलाही स्वरूप ने मेरी आत्मा को ऐसा पकड़ा कि मैं चारों खाने चित्त हो गया और आज तक उस स्वरूप और प्यार को भुला न सका। वह स्वरूप मेरे मन में ऐसा बसा कि दिल को आर-पार कर गया। यह उसी हस्ती की देन और वरदान था कि सावन रूप परमात्मा कृपाल 500 किलोमीटर चलकर अपने-आप मेरे घर आए। मैंने आपसे कहा, ''मेरा दिल दिमाग खाली है मैं नहीं जानता कि मैं आपसे क्या सवाल करूं?'' आपने जवाब दिया, ''मैं खाली जगह देखकर ही आया हूँ, दिमागी कुश्तियां करने वाले मेरे आस-पास बहुत हैं।'' मुझे बचपन से जिस कन्त जिस पति की तलाश थी वह परमात्मा कृपाल ने पूरी की और मेरे हाथ में अंगूठी पहनाई।

प्यारे बच्चो! अगर हम अपने दिल में उनके लिए सेज बनाएंगे तो वह जरूर आएंगे। आप जानते हैं कि यह आश्रम मेरी निजी जर-खरीद जायदाद है। इसमें खेती करके मैं अपनी कमाई से अपना पेट पालता हूँ बाकी सारी कमाई लंगर में डालता हूँ और साध-संगत की निस्वार्थ सेवा करता हूँ।

गुरमेल और बलवन्त की अपनी अच्छी कमाई है और ये दोनों लंगर में काफी योगदान करते हैं। सरदार रतन सिंह, बाबा भाग सिंह, परसराम और गेट वाले चौधरी भी अच्छी जायदाद के मालिक हैं ये साध-संगत की मुफ्त सेवा करते हैं।

मैं बताया करता हूँ कि यह लंगर परमपिता कृपाल का चल रहा है और हर मुनासिब जरूरत अच्छी तरह पूरी हो जाती है। उन्हीं के हुक्म अनुसार मैंने शुरू से ही ओबेराय साहब से घोषणा करवा दी थी कि किसी प्रेमी को सेवा देने की जरूरत नहीं। मेरे महान गुरु ने हर मुनासिब जरूरत को पूरा करने का वचन और वरदान दिया हुआ है, जो पूरा हो रहा है।

प्यारे बच्चो! मेरी एक बार फिर बड़ी दिली ख्वाहिश और प्रबल प्रेरणा है कि आप दुनियावी कामों को करते हुए आज से ही अभ्यास करना शुरू कर दें। यह मजबून करनी का है कथनी का नहीं अगर अब भी आप मेरी बात मान लेंगे तो अपने घर की तरफ के सफर की शुरूआत कर लेंगे और एक दिन मंजिल पर पहुँच जाएंगे। मेरी शुभकामनाएं और मदद आपके साथ है।

संगत के जोड़े झाड़ने वाला,

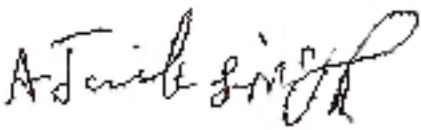

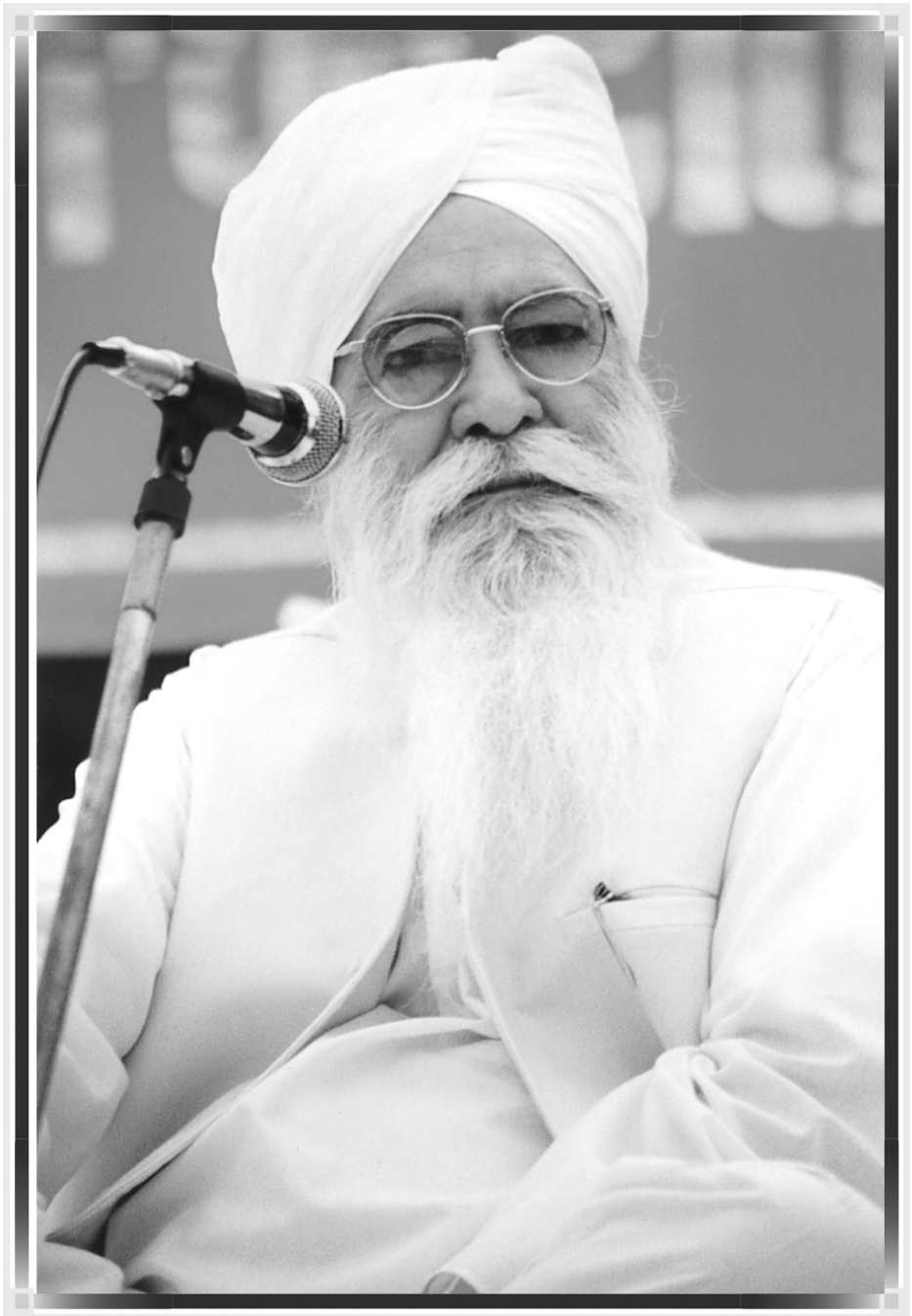

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

काल के जुल्म

(तुलसी साहब जी की बानी) DVD No-511(4) कोलंबिया

यह शब्द रत्न सागर में से लिया गया है। तुलसी साहब के शिष्य हिरदे ने तुलसी साहब से यह सवाल किया, ''जिन आत्माओं को गुरु नहीं मिलता, नाम नहीं मिलता उन आत्माओं के साथ काल क्या करता हैं?'' इस शब्द में तुलसी साहब हिरदे को बताएंगे कि जिनके पास नाम नहीं होता जो यहाँ विषय-भोगों में फँसे हुए हैं काल उन्हें किस तरह नर्कों में डालता है।

जम का जुलम जोर दरसाऊँ। मारग में जिव बिपति बताऊँ।।

तुलसी साहब ने हिरदे से कहा, ''देख हिरदे! वहाँ जीव की जो हालत होती है मैं तुझे उसका नक्शा बताता हूँ। काल के यमदूत इसे मारते हैं पीटते हैं, यह जीव बेहोश हो जाता है। यह पानी माँगता है तो यमदूत कहते हैं कि तू हमें वह पुण्य दे दे तो हम तुझे पानी दे देगें। वहाँ पानी बड़ा भयानक गर्म खून जैसा होता है, जीव वह पानी पी नहीं सकता। जीव ने यहाँ जो दान-पुण्य किए होते हैं वह एक चुली भर पानी के लिए अपने सारे पुण्य दे बैठता है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

कर्म धर्म पाखंड जो दीसे, तिस जम जो गाती लूटे।।

लोह के खंभ तपत के माहीं। जहाँ जीव को ले चिपटाई।।

तुलसी साहब कहते हैं, ''देख हिरदे! यहाँ जीव विषयों की आग लेकर वहाँ नर्क की आग में सड़ता है। आगे काल ने लोहे के खम्बे तपाए हुए हैं। जिन्होंने पराई स्त्रियों को गले लगाया होता है या जिन स्त्रियों ने पराए मर्दों को गले लगाया होता है उन्हें उन

खम्बों के साथ चिपटाया जाता है। वे दुःखी होकर पीछे गिरते हैं तो यम डंडे मारकर कहते हैं इन्हें पकड़ो।''

महाराज सावन सिंह जी इन खम्बों का जिक्र करते हुए बताया करते थे कि ये खम्बे लाल और गर्म किए होते हैं अगर एक खम्बा भी इस संसार में आ जाए तो यह सारा संसार जल जाए। तब याद आता है कि मैंने जो व्याभिचार किए हैं अब उन्हें भोगना पड़ेगा। गले लगाना भावना पर होता है, भाई-बहन गले लगते हैं मन में कोई बुरा ख्याल नहीं होता। माता और पुत्र गले लगते हैं मन में कोई बुरा ख्याल नहीं लेकिन पराई औरत को देखकर हम मन में बुरा ख्याल करते हैं या औरत पराए मर्द को देखकर बुरा ख्याल लाती हैं उनकी ये हालत है।

सब सन्तों ने हमें खबरदार किया है, हमें मर्यादा में रहना सिखाया हैं। हम जिसके साथ शादी की रस्म कर लेते हैं उसी के साथ गृहस्थ करना हमारा हक है, उसके साथ भी हमें सयंम से काम लेना चाहिए। सुखमनी साहब में गुरु अर्जुनदेव जी ने कहा हैः

पर त्रिया रूप न पेखे नेत्र, साध की टहल सन्त संग हेत।

बुरी नजर से पराई औरत को देखना भी गुनाह है। भाई गुरदास ने भी कहा हैः

देख पराई चंगियां धीयां भेणां मावां जाणें।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैः

निमख स्वाद कारण कोट दिवस दुख पावे।।

क्षण भंगुर सुख की खातिर करोड़ों दिन दुख सहता है। करोड़ दिन के तैंतिस हजार साल बनते है।

तड़फ तड़फ जिव जुलम दुखारी। तापत खंभ दुख उपजे भारी।।

जिन भोगों का सुख था अब वह दुख बने। खम्बों के ताप को देखकर पीछे हटता है, यम पीटते हैं फिर खम्बों के साथ चिपटा देते हैं। दो लफ्ज़ी बात है दुनिया में जुल्म करने वाले को दुनिया का कानून माफ नहीं करता, यह तो अंदर के कानून की नकल है। अंदर धर्मराज को सच्चा न्याय करने का हुक्म है, वहाँ किसी की सिफारिश नहीं चलती।

वाहि समय की कहा सुनाई। लोहा अगिन धमन धौंकाई।।
ज्यों धम्मन से धौंकि लुहारा। लोहा जो अगिनी में डारा।।
ऐसे कस्ट जले जिव भाई। वही समय की बिपति बताई।।
पाया भोग सोग सोइ जाना। छटपट करे जीव बिलखाना।।

तुलसी साहब हिरदे से कहते हैं, ''मैं तुम्हें उस वक्त की विपता बताता हूँ कि हम यह शरीर यहाँ पर आग में जलाकर चले जाते हैं या मिट्टी में मिट्टी बनाकर चले जाते हैं। वहाँ सूक्ष्म शरीर दे देते हैं और उसे ये सजाएँ दी जाती हैं। वहाँ माता-पिता, भाई-बहन कोई भी हमारी मदद नहीं कर सकता न वे हमारे पास होते हैं।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

लेखा बोलन बोलना, लेखा खाना खाओ।
लेखा सा दवाइये पढ़े तो पूछण जाओ।।

आप कहते हैं कि आप लोग जितने श्वांस लेते हैं आपके अंदर चित्रगुप्त की गुप्त ताकतें उन श्वांसों का हिसाब रखती हैं। ये गुप्त ताकतें आपके खाने का हिसाब भी रखती हैं। कहीं आपके दिल में ख्याल हो! हमारा खाना कोई नहीं देख रहा? आप जो कुछ भी कर रहे हैं उसका पूरा हिसाब-किताब रखा जाता है। हमें अच्छा-बुरा,

लूला-लंगड़ा जैसा भी शरीर मिला है यह हमारे पिछले कर्मों का ही रिजल्ट है और हम उसी का भोग भोग रहे हैं।

अब नर्कन का सुनो सुभावा। कर्मी जीव सहें दुख दावा।।
कुंभी नर्क निदान यह, पड़े जीव जब जाय।
सिर समेत बूड़ा रहे, सदा नर्क के माहिं।।

तुलसी साहब कहते हैं देख भई! यह एक कुंभी नर्क है। घड़े को कुंभ कहते हैं। नर्क घड़े की शक्ल का है, जीव को इसमें डाल देते हैं यह उसमें डूबा रहता है बाहर साँस भी नहीं ले सकता। जब साँस लेने के लिए सिर बाहर निकालता है तो यम तैयार खड़े होते हैं ये जूते मारकर घड़े में वापिस डुबो देते हैं। यह सिर निकालता है तो फिर जूते पड़ते हैं वहाँ जीव की यह हालत होती है।

जबहि नर्क सिर ऊपर काढ़े। जब ऊपर जूती जम मारे।।
डूबा रहे नर्क के माहीं। सिर काढ़े जम मारे भाई।।
कुंभी नर्क कल्प लौं रहे बासा। मुख में नर्क नाक में स्वाँसा।।

अब आप कहते हैं कि इस नर्क में पखाने से भी बुरी बदबू है, यह वहाँ सिर समेत डूबा रहता है। चार युगों की एक चौंकड़ी बनती है। हजार चौंकड़ी का एक कल्प बनता है थोड़ी सी मुनियाद नहीं, एक कल्पयुग तक वहाँ डूबा रहता है। सिर बाहर निकालता है तो यम जूतियों से मारते हैं, वहाँ जीव की यह हालत होती है।

कई जुगन लौं रहे बिहाला। फिर अघोर नर्क लै डाला।।
ह्वाँको कठिन भोग दुखदाई। तन सड़ि मरै उपजिवहि माहीं।।
निकसि न होय कधी निरबारा। गाढ़े बंध बँधे चौधारा।।

अब आप कहते हैं कि कुंभी नर्क में से निकालकर अघोर नर्क में ले जाते हैं, उस नर्क के दुख बयान नहीं किए जा सकते। यह तन तो यहाँ सड़ जाता है वहाँ सूक्ष्म तन को तकलीफें दी जाती हैं। वेद-शास्त्रों और पुराणों में अठारह नर्कों का जिक्र आता है। आप नासिकेत पुराण पढ़कर देखें! उसमें अठारह नर्कों के बारे में बताया गया है अगर मैं सारे नर्कों का हाल लिखूं तो बहुत किताबें बन सकती हैं लेकिन उन्हें कौन लिखे कौन पढ़े? मैंने तुझे एक नमूना बताया है कि आगे जीवों की यह हालत होती है।

पापी जीव अधम है सोई। करम भोग भुगते जो कोई।।
करनी कीन्ह मलीन बनाई। जिन की दसा भोग दरसाई।।

नर्क अनेकन और हैं, कहँ लग करूँ बयान।
दुख भुगते यह जीव ज्यों जाने जो भोग समान।।

अब आप कहते हैं कि इसे नर्कों में कष्ट क्यों दिए जाते हैं? इससे इसके अपने किए हुए कर्मों के फल भुगतवाए जाते हैं। यह जो बुरे-खोटे कर्म करता है इसे उन कर्मों की सजा दी जाती है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

कप्पड़ रूप सुहावणा, छड्ड दुनिया अंदर जावंणा।
मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावंणा।
हुक्म किए मन भावंदे राह भीड़ा अग्गे जांवणा।
नंगा दोजक चालया ते दिस्से खड़ा डरावणा।
कर ओगुण पछोतावणा।।

ये भुगताय बहुरि सुनु भाई। जोनी खानि जुलम दुखदाई।।

देख भई हिरदे! नर्कों से निकालकर इसे इंसान नहीं बनाया जाता। इसे और योनियों में जो कष्ट दिए जाते है अब मैं वह बताता हूँ।

खानि खानि का कहूँ निबेरा। लख चौरासी जीव बसेरा।।
भवसागर जल भरा अथाही। अंडा जीव पड़े सब माहीं।।

अब आप कहते हैं कि ये जो जमीनी कुर्रा है अगर इसमें एक-एक योनि का हाल बयान करें तो लाखों-करोड़ों ग्रंथों की जरुरत पड़ती है। कौन इतने ग्रंथ लिखे और कौन इतने ग्रंथ पढ़े? हर जीव अपनी-अपनी योनि में दुख भोग रहा है।

अंडा मद्धे जीव बिचारा। सो सब बहे चौरासी धारा।।
धार धार का कहूँ विबेका। तो लिखने नहिं लागै लेखा।।
हे हिरदे यह अद्‌भुत बाता। लख पावे नहिं करम बिधाता।।

आप कहते हैं हे हिरदे! बड़ी अदभुत बात है कि ब्रह्मा, विष्णु और शिव भी इस बात को समझ नहीं सके। नर्कों में से निकालकर इसे वृक्ष बनाते हैं, पता नहीं कितनी जिंदगी वृक्ष की योनि में रहना पड़ता है! आप वृक्षों की हालत तो देखते ही हैं कि कहीं जरुरत के मुताबिक पानी नहीं मिलता यह खड़े-खड़े ही सूख जाते हैं और कहीं सर्दी के मौसम में ज्यादा पानी है। बीमारियां लग जाती हैं कौन इनका ईलाज करवाता है?

फिर कीड़ा बनाया जाता है, साँप बनकर धरती पर रेंगता फिरता है अगर किसी को दिखाई दे जाए तो वे डंडा लेकर पीछे पड़ जाते हैं फिर पक्षी बनाया जाता है। पक्षियों की क्या हालत होती है? न जमीन पर चलने वाले पक्षी सुखी है और न आसमान में उड़ने वाले पक्षी सुखी हैं फिर इसे पशु बनाया जाता है। आप खुद सोचकर देखें! पशुओं की क्या हालत है? फिर कहीं जाकर इंसानी जामे की बारी आती है। इंसानी जामा मिला लेकिन हम इस जामें को विषय-विकारों और भोगों में गवाँ देते हैं।

ब्रह्मा बासन गढ़ै कुम्हारा। वोहु पुनि कर्म जोग अनुसारा।।
सिव जोगी भिच्छा में राजे। बिस्नु भोग बैकुंठ बिराजे।।

अब आप कहते हैं कि देख! ब्रह्मा इस किस्म का कुम्हार है कि उसे जैसा ऑर्डर दिया जाता है वह वैसा ही शरीर बना देता है। उसके आगे कर्म रखे जाते हैं उन कर्मों के मुताबिक हमें शरीर मिलता है। अन्धा-कांणा, लूला-लंगड़ा ये सब हमें हमारे कर्मों के हिसाब से मिलते हैं। जिसे जहाँ जन्म दिया जाता है वह वहीं खुश रहता है। शिवजी पार्वती को लेकर खुश है, ब्रह्मा सावित्री को लेकर खुश है और बैकुंठ में विष्णु लक्ष्मी को लेकर खुश है। जहाँ पर भी जो जीव है वह अपने आपमें खुश है।

करम भोग अनुराग में, माया का बिस्तार।
तीन त्रिया तीनों लई, कर्म जोग अनुसार।।

यहि विधि जक्त चलाई बाटा। इन भुलाय दीन्हा घर घाटा।।
सब दुनिया मारग यहि लागो। भवसागर जिव भया अभागी।।

आप कहते हैं कि शक्ति कला और माया ने इस संसार की रचना की है। ब्रह्मा, विष्णु और शिव की डयूटियां लगा दी। सारी दुनिया इनके पीछे लगकर इनकी पूजा करने लग गई, परमात्मा की याद भुला दी और परमात्मा की भक्ति करने से हटा दिया।

अनुराग सागर में कबीर साहब ने इस बारे में बहुत खोलकर बताया है। आप अनुराग सागर पढ़कर देखें! किस तरह यह दुनिया झूठ से उत्पन्न हुई और किस तरह झूठ के पीछे लगी हुई है।

जग में जीव करै ब्योहारा। घटी बढ़ी कछु नाहिं सिहारा।।
आवागवन भया बिस्तारा। भवसागर यों जीव बिचारा।।

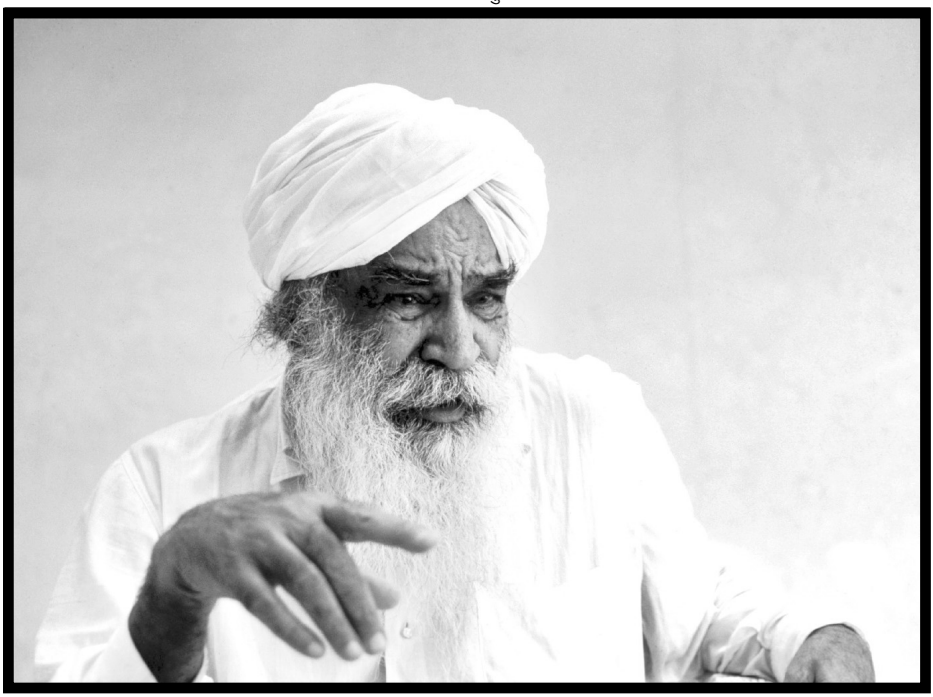

बहुत सी समाजें यह कहती हैं कि जन्म-मरण नहीं है, वे आवागमन को नहीं मानते। सन्त कहते हैं कि जो बीजा है वह जरुर उगता है। हमने जो-जो कर्म किए हैं उन्हें भोगने के लिए हमें यहाँ आना पड़ता है, पुनर्जन्म से इन्कार नहीं किया जा सकता।

मेरी एक रिश्तेदारी का वाक्या है कि एक चौदह साल का लड़का था उसे बड़ी महामारी की बीमारी थी, उसके घर के लोग बड़े परेशान थे। उस लड़के की माता परमपिता कृपाल की नामलेवा थी। उसने परमपिता कृपाल के आगे विनती की कि आप इसे बख्श दें। आखिर परमपिता कृपाल ने उसे स्वपन में ही आकर चेतावनी दी, '' देख बेटी! इसे बड़ी भयानक बीमारी लगी है, उस बीमारी ने इसके शरीर को गला दिया है। अब यह जीवित नहीं रह सकता लेकिन अभी इसकी उम्र पाँच साल बाकी है।''

महाराज कृपाल ने वह गाँव भी बताया जहाँ जाकर यह जन्म लेगा और इस बच्चे के शरीर पर इस जगह निशान होगा। आप बड़े शौंक से देख सकते हैं और आपने वायदा किया कि यह वहाँ पाँच साल जिएगा। महाराज जी ने कहा कि हम तीन दिन बाद रात को बारह बजे चाय पीकर जाएगें। यह ठीक है कि बारह बजने में कुछ मिनट रहते थे। महाराज जी आए तब उस लड़के ने चाय माँगी। माता को भरोसा था कि मैं जब तक इसे चाय नहीं पिलाऊँगी महाराज जी इसे लेकर नहीं जाएगें। वह रसोई में शब्द बोलने लगी। आखिर लड़के ने अपनी माता को आवाज लगाई कि अगर चाय लाने में देरी करेगी तो मैं ऐसे ही चला जाऊँगा।

उस समय मैं वहीं बैठा था। जब मैं उस लड़के के पास से चला जाता तो वह लड़का बहुत दुख महसूस करता था। मैं जब तक बैठा रहता उसे आराम आ जाता था। आखिर उस लड़के ने एक चम्मच चाय का पिया, उसी समय उसने परमपिता कृपाल को जोर से आवाज लगाई मेरी छाती पर हाथ रखा और शरीर छोड़ दिया। उस लड़के के परिवार के लोग रोए नहीं। दुनिया ने काफी कहा कि इनका जवान बेटा मर गया है ये रोते क्यों नहीं? आप सोचकर देखें! जिनके गुरु ने सब कुछ बता दिया हो क्या वे रोएँगे?

हम बहुत से लोग एक साल बाद उस गाँव में गए। वह गाँव हमारे गाँव के नजदीक पड़ता था। हमने वहाँ जाकर पूछा कि आपके घर में लड़का पैदा हुआ है? हम उसे देखने के लिए आए हैं। वे लोग परेशान हुए कि इन्हें किसने बताया कि हमारे घर लड़का पैदा हुआ है। हमने लड़के का निशान देखा वह सही था। वे लोग कारण पूछने लगे? हमने उन्हें बताया कि अगर हम आपको बताएँगे तो आपका दिल टूट जाएगा। उन्होंने हमारे साथ बहुत प्रेम-प्यार

किया, हमने प्रेम के बस उन्हें बताया कि इस लड़के की उम्र सिर्फ पाँच साल है आप इसे प्रेम-प्यार से पालना। वाकई ही पाँच साल बाद वह लड़का फिर शरीर छोड़ गया।

जब ऐसी घटनाएं देखते हैं तो इससे इंकार नहीं किया जा सकता। सन्त हमें कहते हैं कि आप खुद अंदर जाकर देखें कि पुनर्जन्म है या नहीं?

अब वह कथा कहूँ बिस्तारी। हिरदे सुनिये ज्ञान बिचारी।।
संत छाप जेहि जीव पै लागी। कोइ जिव भूलि गया अनुरागी।।
कूसंगति से भूल समानी। जाकी कहूँ सुनो सहदानी।।
जों कदाचि नरक में जावे। संत जाय के जहाँ छुड़ावें।।

अब आप हिरदे से कहते हैं कि जिस जीव को नाम मिला होता है उस पर सन्तों की मोहर-छाप लगी होती है। पहली बात तो यह है कि काल सन्तों के जीव को नहीं लेता अगर गलती से काल उस जीव को अंगीकार कर ले तो सन्त उस जीव को नर्क में जाकर छुड़वा लाते हैं। अगर कोई जीव कुसंगत में पड़कर गुरु के खिलाफ भी हो जाए फिर भी गुरु उसे नहीं छोड़ता। गुरु परोपकारी होता है, उसने नाम दिया होता है।

साह असामी पै करज, जाय लेइ जहँ होय।
ऐसे संत सुभाव को, परख लीजिए सोय।।

आप कहते हैं जिस तरह किसी साहूकार की आसामी कर्ज लेकर दूरदराज के क्षेत्रों में चली जाती है तो साहूकार कर्ज लेने के लिए वहाँ भी चला जाता है। सन्तों का स्वभाव बड़ा ही दयावान होता है। सन्त जीव के साथ बहुत प्यार करते हैं वे जीव को नर्कों में नहीं रहने देते क्योंकि उन्होंने जीव को नाम दिया होता है।

महाराज सावन सिंह जी एक आत्मा का जिक्र किया करते थे कि वह आत्मा नर्क में चली गई। बाबा जयमल सिंह जी ने आपसे कहा कि उस आत्मा को नर्क से ले आएं। महाराज सावन सिंह जी ने नर्क में जाकर उस आत्मा से कहा कि सिमरन याद है? उस आत्मा ने कहा, ''नहीं।'' फिर आपने पूछा, ''सतगुरु का सवरुप आता है?'' वह बोली, ''नहीं।'' महाराज जी ने कहा कि मेरी आवाज सुनाई दे रही है? वह आत्मा बोली, ''हाँ आपकी आवाज सुनाई दे रही है।'' आपने कहा कि मेरी आवाज सुनकर चली आ। फिर वह आत्मा कहने लगी, ''मुझे सिमरन भी याद है और बाबा जी का स्वरुप भी आ रहा है। मैं देख रही हूँ कि नर्कों में जीवों के साथ क्या-क्या हो रहा है।''

आज तो महान कृपाल की दया है। पश्चिम से मुझे बहुत से प्रेमियों के पत्र और टेलिग्राम आते हैं कि उन सतसंगियों के माता-पिता को नाम नहीं मिला होता लेकिन जब वे चोला छोड़ जाते हैं तो महाराज कृपाल उनकी संभाल करते हैं। वे यह सबूत देते हैं कि हमने महाराज कृपाल की मौजूदगी महसूस की है।

मोहर छाप के काज सिधावें। नरक माहिं वे जीव जुड़ावें।।
अँगुठा बोरि नरक के माहीं। वहि ततछिन में नरक सुखाई।।

जीव पर नाम की मोहर-छाप लगाई जाती है अगर वह जीव गलती से नर्क में चला जाए तो सन्त नर्क में अपना अँगुठा देकर नर्क को ठंडा कर देते हैं। यह कानून है कि जिसको फाँसी लगनी हो अगर बादशाह कह दे तो फाँसी रोक दी जाती है। अगर बादशाह जेलखाने में चला जाए तो सारे कैदी रिहा कर दिए जाते हैं। इसी तरह अगर सन्त नर्कों में जाते हैं तो वह नर्कों को ठंडा कर देते हैं इसलिए डरता हुआ काल सन्तों के जीवों को अंगीकार नहीं करता।

जोनी छूटि नरक से आवे। फिरि नर देही जोनि जुड़ावे।।
एक जीव कारन उपकारी। सब छूटे भय जीव सुखारी।।
अब नानक की साख सुनाऊँ। सोदर पौड़ी में समझाऊँ।।

अब आप कहते हैं कि कायदा तो यह है कि इसे नर्कों में से निकालकर पहले वृक्ष बनाते हैं फिर कीड़ा बनाते हैं फिर इसे पशु-पक्षी बनाते हैं फिर कहीं जाकर इंसानी जामें की बारी आती है लेकिन सन्त नर्कों में से निकालकर एक बार में ही इंसान का जामा दे देते हैं। यह सन्तों का बहुत बड़ा परोपकार होता है, इससे बढ़कर और कौन उपकार कर सकता है?

गुरु नानकदेव जी ने नर्क खाली किए। राजा जनक ने नर्क खाली किए। राजा जनक जब अपने धाम जा रहे थे तो रास्ते में जीवों की चीख-पुकार सुनकर पूछने लगे, ''ये जीव क्यों चिल्ला रहे है?'' यमों ने कहा कि इन लोगों ने बहुत बुरे कर्म किए हैं इसलिए ये सड़ रहे हैं और चीख पुकार कर रहे हैं। राजा जनक ने कहा, ''मुझे यहीं रहने दें।'' यमों ने कहा कि आप यहाँ नहीं रह सकते। राजा जनक ने कहा, ''इन्हें आजाद करें।'' यमों ने धर्मराज के पास जाकर कहा कि राजा जनक वहाँ से नहीं जा रहा कहता है इन्हें आजाद करें। धर्मराज ने आकर कहा, ''जब ये कुछ देंगे तब ही इनकी बंदखुलासी हो सकती है।''

राजा जनक ने वहाँ अपना एक घड़ी का सिमरन दिया, सबकी बंदखुलासी की। इसका नाम परोपकार है। राजा जनक योगीश्वर था, ज्ञानी था लेकिन सन्त नहीं था। उसका विवेक का सिमरन था लेकिन सन्तों ने विवेक को नहीं लिया। सन्तों का सार शब्द है। अनहद शब्द ब्रह्म का है। सार शब्द पारब्रह्म से शुरू होता है और सच्चखंड में मुकम्मल होता है।

धन धन राजा जनक है, जिन सुमिरन किया बिबेक।
एक घड़ी के सुमिरते, पापी तरे अनेक।।
ऐसा सुमिरन जानि के, संतन पकड़ी टेक।
नानक सुमिरन सार है, बिसरे घड़ी न एक।।

नानक जाय अँगूठा बोरा। नरक जीव के बंधन तोड़ा।।
ऐसी साख समझ कोई बूझे। तिमिर जाय आँखी से सूझे।।

आप कहते हैं कि तू अपनी दृष्टि को ज्योत में लगा दे प्रकाश में लगा दे, तेरी आँखों की अज्ञानता का अँधेरा चला जाएगा। तू खुद अपनी आँखों से देखेगा कि सन्त क्या परोपकार कर रहे हैं?

साखी देन का कारम नाहीं। अँधे जीव भरम के माहीं।।

आप कहते हैं, ''हिरदे! हमारा दिल तो कहानियां सुनाने का नहीं करता लेकिन ये जीव अँधे हैं, भ्रम में हैं। सन्तों को इन्हें बार-बार हर तरीके से समझाना पड़ता है।''

जो बड़ भाग दया वे करई। तो कदाचि बंधन निरबरइ।।
जुग जुग भूले जीव अनेका। दया भाव सतगुरु से ठेका।।

आप कहते हैं कि हर युग में जीव भूलते आए हैं। सन्त हमेशा ही दया करके समझाते आए हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

भूले सिक्ख गुरु समझाए, औजड़ जान्दे मारग पाए।।

सन्त दया की रीति नियारी। बार बार चरनन पर वारी।।

तुलसी साहब हिरदे से कहते हैं, ''मैं सन्तों पर बलिहार जाता हूँ उन्हें नमस्कार करता हूँ। सन्तों की दया की रीत न्यारी होती है। वे पापियों से भी पापी को गले लगाते हैं, बखशिश करते वक्त सोचते तक नहीं।''

जो कछु करें करें सोइ सन्ता। सन्त बिना नहिं पावे पंथा।।

अब आप कहते हैं भई हिरदे! परमात्मा के घर में जो कुछ करते हैं सन्त ही करते हैं। परमात्मा ने सन्तों को बहुत मुख्तियारी दी होती है। सन्त जिसे चाहे ले जाएं जिसे चाहे छोड़ जाएं। सन्त परमात्मा के शरीक नहीं होते परमात्मा के प्यारे बच्चे होते हैं। सन्त परमात्मा को अपने प्यार में बाँध लेते हैं और परमात्मा से जो चाहे करवा सकते हैं।

सतगुरु जो जोइ राह बतावें। भूले को मारग दरसावें।।

सतगुरु संत दयाल से, करम रेख मिटि जाय।
मन तन सूरति साँच से, ज्यों का त्यों रहि जाय।।

तुलसी साहब कहते हैं कि सन्त कर्मों के लेख को मिटा देते हैं। सन्त दयालु होते हैं वे प्रालब्ध को नहीं छेड़ते। लोग उन्हें जैसा समझते हैं वे वैसे नहीं होते।

सन्त प्रेमी से कहते हैं, ''देख भई! ये तेरे पिछले कर्मों का रिजल्ट है तू इसे भोग ले, वे उसमें भी मदद करते हैं। तू जो क्रियमान कर्म करता है इनकी आशा न रख। संचित कर्मों का खजाना ब्रह्म में है। सन्त अभ्यास करवाकर हमें उससे ऊपर ले जाते हैं। आत्मा जैसे पहले प्योर थी उसे वैसी प्योर बनाकर अपने दरबार ले जाते हैं।''

24 जून 1983

***

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज द्वारा बाबा सावन सिंह जी के जन्मदिन पर संदेश

चुनाव आपका है

जुलाई 1968

मेरे प्यारेयो!

मैं आप सबको हुजूर महाराज बाबा सावन सिंह जी के शुभ जन्मदिन पर अपना प्यार और शुभकामनाएं देता हूँ। आप सौभाग्यशाली हैं कि आपको इंसानी जामा मिला है जोकि सब योनियों में उत्तम है, मैं चाहता हूँ कि आप सब अच्छा जीवन जिएं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि इंसानी जामें के बारे में बात करने और लिखने का बहुत कम महत्त्व है। कर्म के बिना शब्द शून्य और व्यर्थ है। इंसान को सच्चे अर्थों में इस तरह का जीवन जीना सीखना चाहिए।

हम जो कहते हैं उसके कोई मायने नहीं है। मायने इस बात के हैं कि हम क्या हैं और कैसे जी रहे हैं? अब तक हमने जो शब्द पढ़े हैं और जो हमारे विचार रहे हैं उन्हें हमें अपने वजूद का

अहम हिस्सा बनाना चाहिए। हुजूर ने हमें हुक्म दिया कि दिन-प्रतिदिन हमें उन पर अमल करना चाहिए। हमने जो जीवन जिया है वही हमारे साथ जाता है-अनपढ़ व्यक्ति मरने के बाद पढ़ा-लिखा नहीं बन सकता।

हमें लगातार सतर्क रहना चाहिए ताकि जब रास्ते में बाधाएं आएं हम ठोकर खाकर गिर ना जाएं! अगर आप गिर भी जाएं तो कभी भी अपने संतुलन को खोने की इजाजत न दें। अपने आपको संभालें और सब्र व दृढ़ता से आपके सिर पर जो गुरु काम कर रहा है उसमें पूरे विश्वास के साथ अपने रास्ते में बढ़ते चले जाएं।

कबीर साहब कहते हैं, ''अगर कोई चलते हुए गिर जाता है तो उसको दोष न दें अगर वह गिरा ही रहता है एक लम्बा सफर अभी उसके आगे है।'' निश्चय कर लें कि आप अपने मन के आदेशानुसार चलेंगे या गुरु की आज्ञा के अनुसार चलेंगे।

चुनाव आपका है, आपके लिए कोई और नहीं चुन सकता। जो मालिक की राह चुनते हैं, हो सकता है यह दुनिया उनकी निंदा करे, आपको चिंता करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि आपने सही रास्ता चुना है।

गुरु शब्द स्वरूप देह है। वह प्रकाश, जीवन और प्रेम है अगर आप उसमें जिएंगे और उसमें रहेंगे तो आपका जीवन बन जाएगा और आपको और अधिक प्रकाश व प्यार देगा।

शब्द जिंदगी की रोटी और जिंदगी का पानी है। जब आप भूखे और प्यासे होते हैं आंतरिक शान्ति में प्रवेश कीजिए आपको इसकी बहुतायत मिलेगी जो जीवन को अनन्त प्रदान करती है। यह आपके अंदर है कोई भी इससे खाली नहीं।

भूतकाल को भूल जाएं भविष्य को भूल जाएं पूरी तरह आराम से रहें। स्थिर हो जाएं, अपने आपमें अकेले हो जाएं। अपने आपको पूर्ण रूप से गुरु को समर्पित कर दें। आपके जरिए प्रकाश व प्रेम पैदा होकर सारे संसार में फैलेगा।

हर दिन हर वक्त गुरु का धन्यवाद करें उसके अंदर परमात्मा समाया हुआ है। गुरु ने आपको इस रास्ते पर डाला है और आप उसकी दी हुई बख्शिशों से आनन्द उठा रहे हैं, उसका शुक्राना करें। इस तरह से आपको हमेशा गुरु का अहसास रहेगा। उसके बिना आप कुछ नहीं कर सकते और उसके साथ आप सब कुछ कर सकते हैं। आप जितना ज्यादा समय अपने गुरु के साथ बिताएंगे आपकी रोजाना की जिंदगी आसान होती चली जाएगी।

कबीर साहब कहते हैं, ''अगर शिष्य समुंद्र के इस पार रहता है और गुरु उस पार रहता है तो अपनी सुरत को उसकी ओर लगाएं। आपको पूरी दया मिलेगी क्योंकि गुरु शब्द स्वरूप देह है और हर जगह व्यापक है। जब हमें नामदान मिलता है तब गुरु पावर हमारे अंदर बस जाती है और वह पावर हमें संसार के अंत तक नहीं छोड़ती।'' कबीर साहब कहते हैंः

गुरु को हियरे राखते, आज्ञा सिर माहीं।
कहे कबीर तिस दास को तीन लोक डर नाहीं।।

हमेशा अपने अंदर मौजूद गुरु पावर के प्रति सचेत रहें और उसके हुक्म के अनुसार जिएं। आपको तीनों लोकों में फिर किसी से डरने की जरूरत नहीं है।

पूरे प्रेम सहित,
कृपाल सिंह

***

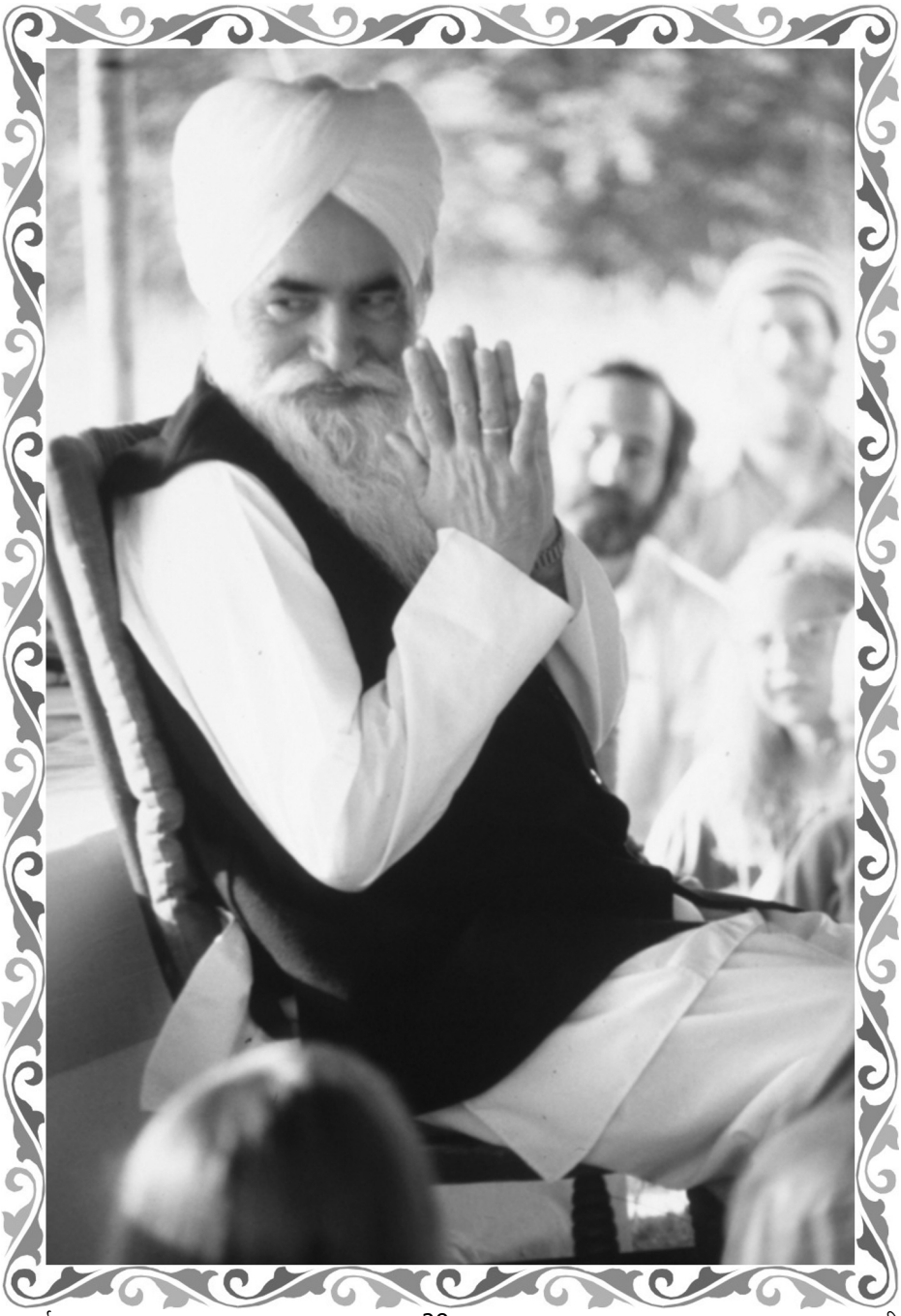

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

प्रेम क्या है?

1 दिसम्बर 1978 77 आर.बी.आश्रम

एक प्रेमी :- *सन्त जी! मैंने इस बात पर गौर किया है कि जब मैं पाँच शब्द गाता हूँ तो मेरे मन को अच्छा लगता है। क्या मैं हमेशा इसी तरीके से सिमरन कर सकता हूँ? कल रात नींद की वजह से मुझे बहुत तकलीफ हुई और मैं भजन-सिमरन से उठ खड़ा हुआ और मैंने उसी तरीके से भजन गाकर सिमरन किया तो मैं कामयाब हो गया। क्या मैं हमेशा भजन-अभ्यास के लिए उसी तरीके को अपना सकता हूँ?*

बाबा जी :- अगर आपको नींद बहुत ज्यादा परेशान करे तो आप वैसा कर सकते हैं। जब आप भजन-अभ्यास कर रहे हैं अगर उस समय नींद तंग करती है तो आपको थोड़ा सा टहल लेना चाहिए या मुँह धो लेना चाहिए।

नींद हमें तभी तंग करती है जब हम भजन-अभ्यास में लापरवाह हो जाते हैं। हम अपने दुनियावी कामों को बहुत ध्यान से करते हैं और दुनियावी काम करते हुए नींद हमें परेशान नहीं करती। इसी तरह अगर हम पूरा ध्यान देकर भजन-अभ्यास करेंगे तो नींद हमें ज्यादा परेशान नहीं करेगी।

एक प्रेमी :- *सन्त जी! एक बार आपने हमें सन्त बानी आश्रम में ससी-पुन्नू के महान प्रेम की कहानी सुनाई थी। आपने कहा था कि जब तक हमारे अंदर गुरु के शारीरिक स्वरूप के लिए वैसा प्रेम न हो तो हम गुरु को अपने अंदर प्रकट नहीं कर सकते।*

मैं महसूस करता हूँ कि आपके लिए मेरा प्रेम बहुत मजबूत है, बहुत ज्यादा है पर कभी-कभी मुझे लगता है कि वह प्रेम गायब

हो गया है। इसका मतलब यह है कि क्या मेरा प्रेम भावुक और ऊपरी है मुझे इस बारे में क्या करना चाहिए?

बाबा जी : कबीर साहब कहते हैं, ''प्रेम आया लेकिन वह चला कहाँ गया?'' आप फिर कहते हैं कि प्रेम बाहर से नहीं आता वह हमारे अंदर होता है। हम महसूस करते हैं कि प्रेम आ रहा है और प्रेम जा रहा है लेकिन यह सच नहीं है। यह केवल हमारा मन है जो एक पल हमें प्रेम महसूस करवाता है और दूसरे पल हमें प्रेम से खुष्क कर देता है।

प्रेम हमारे अंदर है और वह हमेशा हमारे अंदर बसता है लेकिन हम अपने मन को काबू में नहीं रखते इसीलिए हमें लगता है कि प्रेम आ रहा है और जा रहा है। वह जो एक पल आता है और चला जाता है उसे प्रेम नहीं कह सकते।

कबीर साहब कहते हैं, ''हर कोई प्रेम की बातें करता है लेकिन **प्रेम क्या है ?** इसे कोई नहीं समझता। उसे ही प्रेमी कहा जा सकता है जो हमेशा अपने प्यारे के प्रेम में डूबा रहता है।''

ससी और पुन्नू की कहानी में ससी को अपने प्यारे से बहुत प्रेम था। ससी एक शहजादी थी। वह अपने खोए हुए प्रेम की खोज के लिए रेगिस्तान की गर्म रेत पर नंगे पैर चलने से नहीं घबराई। उसने यह त्याग काम-वासना के लिए नहीं किया था। वह केवल अपने प्रेम के कारण आरामदायक महलों से बाहर निकली।

उस समय यह कहा जाता था कि ससी के इस त्याग और प्रेम को देखकर तपते हुए सूरज ने अपने आपको बादलों के पीछे छिपा लिया ताकि गर्मी कुछ कम हो सके। उस समय रेत इतनी गर्म थी अगर आप उस पर कोई बीज डालें तो वह अपने आप ही रेत की

गर्मी से भुन जाए। ससी का प्रेम मजबूत था इसलिए वह गर्मी से नहीं डरी और न ही उसका मन घबराया।

फकीर हाशिमशाह ने ससी के बारे में लिखा है कि वह रेगिस्तान की जलती हुई रेत को देखकर घबराई नहीं और उसने अपने प्यारे की खोज जारी रखी। ससी के पाँव बहुत कोमल थे। ससी जलती हुई रेत पर चल रही थी और उसके पाँव भट्टी की तरह गर्म थे। अगर किसी में ससी की तरह अपने प्यारे के लिए इतना धैर्य और त्याग हो तो वह जरुर उसे पा लेगा।

आप देखें! प्रेम में ससी ने बहुत कष्ट पाया। हमने प्रेम में कष्ट नहीं भोगना, हमने केवल बैठना है हम उसमें भी खुष्क हो जाते हैं।

कबीर साहब कहते हैं,''हम सभी मन के आगे मुर्दे की तरह हैं सिर्फ साधु ही अपने गुरु के आगे मुर्दे जैसा होता है। जो यह समझ गए उन्होंने अपने मकसद को हासिल कर लिया।''

एक बार गुरु गोबिंद सिंह जी ने सतसंग में कहा, ''यहाँ गुरु के शिष्य हैं या मन के शिष्य हैं?'' क्योंकि ज्यादातर लोग मन के आगे मुर्दों की तरह हैं उनका मन उन्हें जो भी करने के लिए कहता है वे वही करते हैं। जिस तरह मुर्दे की अपनी कोई मर्जी नहीं होती आप मुर्दे को जहाँ भी लेकर जाएँ, वह वहीं चला जाएगा। इसी तरह हम सब मन के आगे मुर्दे की तरह हैं।

हमारा मन हमसे जो भी करवाना चाहता हैं हम वही करते हैं। यहाँ केवल कुछ शिष्य ही ऐसे हैं जो सच में गुरु के शिष्य हैं और वे हमेशा वही करते हैं जो गुरु उनसे करवाना चाहता है बाकी सब मन के शिष्य हैं।

जब गुरु गोबिंद सिंह जी ने सतसंग में यह कहा तब एक शिष्य उठा और बोला, ''सच्चे पातशाह! मैं आपका शिष्य हूँ, मैं अपने मन का शिष्य नहीं हूँ।'' तब गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा, ''ठीक है! कल तुम मेरे लिए बाजार से एक ऐसा कपड़ा लेकर आना उस जैसा दूसरा कपड़ा बाजार में न हो।'' उस शिष्य ने जवाब दिया, ''ठीक है! सतगुरु मैं ऐसा ही करूँगा।''

सतसंग के बाद वह प्रेमी शिष्य घर जाते हुए बाजार गया और उसने अपने गुरु के लिए बहुत अच्छा और बहुत महंगा कपड़ा खरीदा। जब वह घर वापिस पहुँचा उसकी पत्नी ने वह कपड़ा देखा तो उसे वह कपड़ा बहुत पसंद आया। उसकी पत्नी ने उससे पूछा, ''यह कपड़ा उसने किसके लिए खरीदा है?'' प्रेमी शिष्य ने जवाब दिया, ''गुरु जी ने मुझे बहुत अच्छा कपड़ा लाने के लिए कहा था मैं यह कपड़ा गुरु जी के लिए लाया हूँ, इस जैसा और कपड़ा बाजार में नहीं है।'' जब उसकी पत्नी ने सुना कि बाजार में इस तरह का दूसरा कपड़ा नहीं है तो उसे लगा कि यह कपड़ा उसे ले लेना चाहिए।

उसकी पत्नी ने कहा, ''यह कपड़ा तुम मुझे दे दो और गुरु जी से कहना कि तुम्हें अभी ऐसा कपड़ा नहीं मिला, तुम अभी कोशिश कर रहे हो।'' प्रेमी शिष्य ने जवाब दिया, ''मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैंने अपने गुरु से वायदा किया है कि मैं उनके लिए ऐसा कपड़ा लेकर आऊँगा।'' पत्नी ने कहा, ''तुमने मुझे यह कपड़ा नहीं दिया तो मैं तुमसे नाराज हो जाऊँगी अगर तुम मुझसे प्यार करते हो तो यह कपड़ा मुझे दे दो और गुरु जी से कहना कि अभी कपड़ा नहीं मिला तुम अच्छे कपड़े की खोज कर रहे हो।''

वह गुरु का सच्चा शिष्य नहीं था। वह अपने मन और अपनी पत्नी का शिष्य था इसलिए उसने वह कपड़ा अपनी पत्नी को दे

दिया और सतसंग में चला गया। उसकी पत्नी भी उसके पीछे-पीछे सतसंग में आकर बैठ गई। सतसंग के बाद जब गुरु गोबिंद सिंह जी ने शिष्य से पूछा, ''प्यारे! क्या तुम मेरे लिए कपड़ा ले आए हो?'' तब वह प्रेमी शिष्य बहाने बनाने लगा कि मैंने बाजार में बहुत ढूँढा है लेकिन मुझे कोई अच्छा कपड़ा नहीं मिला। मैं जल्दी ही आपके लिए अच्छा कपड़ा लेकर आऊँगा।

जब प्रेमी शिष्य ने गुरु जी को यह जवाब दिया तो उसी वक्त उसकी पत्नी ने वह कपड़ा निकालकर गुरु जी के आगे कर दिया और कहा, ''जो कपड़ा यह आपके लिए लेकर आया था वह कपड़ा इसने मुझे दे दिया है इसलिए यह आपका शिष्य नहीं यह तो मेरा शिष्य है।'' तब गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा, ''मुझे पता है कि यह मन का शिष्य है। कुछ ही गुरु के सच्चे शिष्य हैं नहीं तो सब मन के अनुसार ही चलते हैं।

कबीर साहब कहते हैं, ''पैसा, पत्नी, जायदाद और ऐसी ही दूसरी चीजें इंसान को जो हुक्म देती हैं यह वैसा ही करता है। अगर हम अपने अंदर गुरु का प्रेम कायम रखें तो हमारी अपनी मुक्ति का सवाल नहीं उठता, हमें तो मुक्ति मिलेगी ही और ऐसा इंसान जिसने अपने दिल में गुरु के लिए प्रेम को कायम रखा है वह दूसरी आत्माओं को भी मुक्ति दिलवा सकता है।''

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''अगर शिष्य अपने अंदर गुरु के लिए वैसा ही प्यार कायम रखे जैसा गुरु से मिलने के समय पहले दिन था तो वह खुद मुक्त है और अपने परिवार को भी मुक्ति दिलवा देता है। जब वह परमात्मा के दरबार में जाता है उसे वहाँ बहुत सम्मान मिलता है।''

***

धन्य अजायब

16 पी.एस. रायसिंह नगर आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम

02, 03 व 04 अगस्त 2019

07 से 11 सितम्बर 2019

04, 05 व 06 अक्टूबर 2019

01, 02 व 03 नवम्बर 2019

29, 30 नवम्बर व 01 दिसम्बर 2019